International Journal of Applied Research 2021; 7(7): 359-362

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(7): 359-362
www.allresearchjournal.com
Received: 28-05-2021
Accepted: 30-06-2021

भावना भट्ट
शोध छात्रा, राजनीति विभाग,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
भावना भट्ट
शोध छात्रा, राजनीति विभाग,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
उत्तराखण्ड, भारत

भारतीय विदेश नीति एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रथम कार्यकाल (वर्ष 2014) का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भावना भट्ट

सारांश
विदेश नीति राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित एवं सवर्द्धित करने का एक साधन हैं, जिसके माध्यम से प्रत्येक राष्ट्र अन्य राष्ट्रों से कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करता है इन सम्बन्धों को स्थापित करने के पीछे मुख्य उद्देश्य राष्ट्र का आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक विकास एवं सुरक्षा स्थापित करना है। वही भारतीय विदेश नीति की बात करी जाए तो यह निरन्तर गतिशील एवं विकासोन्मुख रही।

कूटशब्दः विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, भमण्डलीकरण Act East Policy

प्रस्तावना
भारतीय विदेश नीति के अन्तर्गत पं0 नेहरू द्वारा स्थापित मूल सिद्धान्त अगले 14 वर्ष के आम चुनावों में कुछ सूक्ष्म परिवर्तन के साथ लगभग वहीं रहे मुख्य परिवर्तन वर्ष 1991 में देखा गया जब प्रधानमंत्री पी0वी0 नरसिम्हा सरकार के अन्तर्गत आर्थिक नीतियों में प्रमुख जोर दिया गया। वहीं पिछली वैदेशिक नीतियों का केन्द्र बिन्दु गुटनिरपेक्षता एवं तनातनी होता था। वर्ष 2014 में स्थापित मोदी सरकार द्वारा विदेश नीति का मुख्य आधार वहीं रखते हुए परिस्थितियों के अनुसार निरंतरता का परिचय दिया गया। जिसमें वास्तविकतावाद एवं परिसंरचनावाद में पुट देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र को दो खण्डों में विभाजित किया गया है जिसमें प्रथम खण्ड भारतीय विदेश नीति का संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत करता है वहीं दूसरा खण्ड प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रथम कार्यकाल की वैदेशिक नीतियों का विस्तृत अध्ययन करता है।

शोध विधि तथा क्षेत्र
प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय विदेश नीति एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रथम शासनकाल की विदेश नीति का विश्लेषण किया गया है जो प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस उद्देश्य हेतु विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।
भारतीय विदेश नीति को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए उसके पूर्व के वैदेशिक नीति निर्माणक के कालों का संक्षिप्त विवरण जानना आवश्यक है। भारतीय विदेश नीति का प्रारम्भ प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू द्वारा वर्ष 1947 से 1964 तक अपने जीवन के अंत तक संचालित किया गया। अन्य विदेश नीति निर्माताओं की तरह राष्ट्रीय हितों को विदेश नीति का निर्धारक माना। नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होने के साथ–साथ उन्हें प्रथम विदेश मंत्री का भी गौरव प्राप्त है। 17 वर्षो तक विदेश मंत्री के कार्यकाल में वे अन्तर्राष्ट्रीयता और अखिल एशियावाद समर्थक थे तो वहीं वे साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और फॉसीवाद के विरोधी रहें। उनकी धारणा यह थी कि सभी अन्तर्राष्ट्रीय मामले शान्तिपूर्ण तरीके से सुलझाये जायें। सितम्बर 1946 में भारतीय विदेश नीति के उद्देश्यों की घोषणा कर दी थी। जो इस प्रकार है – ''हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में, अपनी नीति के अनुसार पूरी भागीदारी करेंगे। हम किसी अन्य राष्ट्र के पिछलग्गू के रूप में किसी सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे। हमें आशा है कि हम अन्य राष्ट्रों के साथ प्रत्यक्ष और नजदीकी सम्बन्ध स्थापित करेंगे। विश्व शान्ति एवं स्वतंत्रता की अभिवृद्धि के लिए उनके साथ सहयोग करेंगे। हमारी विशेष इच्छा है कि औपनिवेशिक तथा पराधीन देशों और लोगों का उद्धार हो, और सिद्धान्त तथा व्यवहार दोनों में सभी जातियों के लोगों को समान अवसर प्राप्त हों।''
जिस प्रकार नेहरू विचार स्पष्ट रहते हुए भी जैसे अपनी निर्गुट नीति का संचालन किया भारतीय सम्प्रभुता को खतरे में आने से बचाया। उसके पश्चात भी नेहरू नीति असफल मानी जाती है क्योंकि

वे महाशक्तियों से तालमेल बनाने में असफल रहे, वहीं एक सफल क्षेत्रीय नीति का अभाव था। ना ही एक ठोस सुरक्षा रणनीति थी। जिसका दुष्परिणाम नेहरू एवं समस्त भारत को सन् 1962 में भुगतना पड़ा। जब चीन द्वारा भारत पर आक्रमण कर दिया गया जिसमें भारत को पराजित होना पड़ा।

भारतीय विदेश नीति एवं लाल बहादुर शास्त्री जी

भारतीय विदेश नीति में पं0 नेहरू के उपरान्त शास्त्री जी द्वारा ये बागडोर ली गई। जिसके अन्तर्गत वह एवं परिवर्तित राजनीति के पक्षधर रहे। पूर्व के आदर्शवादी मॉडल को दृष्टि में रखते हुए राष्ट्रीय हित को सम्मुख रखते हुए उनके द्वारा यथार्थवादी मॉडल अपनाया गया।

शास्त्री जी की विदेश नीति का केन्द्र बिन्दु जहां पड़ोसी राष्ट्र से सम्बन्ध सुधार था वहीं पूर्व नीति महाशक्ति केन्द्रित थी। भारत–पाक युद्ध 1965 जिसमें शास्त्री जी के द्वारा सैनिक विशेषज्ञों की राय को जिस प्रकार बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार किया एवं भारत को पाक की तुलना में बहुत कम नुकसान हुआ। वहीं युद्ध विराम एवं शान्तिपूर्ण समाधान के लिए (USSR सोवियत संघ) वर्तमान रूस की मध्यस्थता में शास्त्री तथा अय्यूब खॉ ताशकन्द में मिलें। इसका परिणाम भारत के लिए नुकसानदेह ही रहा क्योंकि भारत को अपने विजित एवं वैधानिक दृष्टि से अधिकारित कश्मीर को भी शान्ति एवं मित्रतापूर्ण सम्बन्धों के विकास के लिए स्वीकार किया गया भारतीय विदेश नीति में आने से अपनी मृत्यु तक भारतीय विदेश नीति का कुशलता के साथ संचालन किया गया।

भारतीय विदेश नीति एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी

वैदेशिक मामलों के अन्तर्गत इन्दिरा गांधी काफी सफल भूमिका निर्वहन करते हुए नजर आती हैं। पूर्व की नीतियों का पालन करते हुए वर्तमान परिवर्तित परिस्थितियों के साथ विशेष तालमेल का परिचय उनके द्वारा दिया गया। विश्व धरातल में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संचालन में इन्दिरा गांधी अपने पिता की तुलना में कहीं अधिक सफल मानी गई। चाहे वह सोवियत संघ के साथ 1971 की सफल मित्रतापूर्ण संधि हो या 1971 को युद्ध में भारत का विजित होना हो। 1972 में सफल शिमला समझौता सम्पन्न होना या 1974 में भारत का प्रथम परमाणु परीक्षण हो आदि। भारतीय विदेश नीति में उनका पक्ष काफी यथार्थवादी रहा।

भारतीय विदेश नीति एवं मोरार जी देसाई

भारतीय राजनीति में एक बहुत बड़ा उलटफेर तब हुआ जब केन्द्र में 30 वर्षो से एकदलीय प्रभुत्व का अन्त हुआ। इस बड़े परिवर्तन से भारतीय जनता ही नहीं अपितु समस्त अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय भी विस्मृत हो गया। वहीं इन्दिरा गांधी सरकार को पराजित कर जनता सरकार का शासन में आना लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति अन्तर्राष्ट्रीय जगत में एक विश्वास उत्पन्न हुआ। पिछली सरकार में जहां अमेरिका के साथ सम्बन्धों में प्रगाढ़ता नही देखी गई वहीं मोरार जी सरकार में (USSR रूस) के साथ सम्बन्धों को स्थिर रखते हुए अमेरिका एवं चीन के साथ सम्बन्धों में मित्रतापूर्ण रवैया बढ़ाया गया। अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर की 1978 में भारत यात्रा एवं उनकी अमेरिकी राजकीय। अमेरिकी सरकार द्वारा 60 मिलियन यू0एस0 डालर का अनुदान आदि। सभी से स्पष्ट होता है कि वे पिछली विदेश नीति को धारा से बिल्कुल विपरीत चले।

भारतीय विदेश नीति एवं राजीव गांधीः

श्रीमती इन्दिरा गांधी के मरणोपरान्त राजीव गांधी प्रधानमंत्री पद के लिए निर्वाचित हुए। उनकी विदेश नीति में चार प्रमुख तत्व विशेष प्रकार से दृष्टिगत होते दिखे जो निम्न प्रकार से हैं –

(1) निःशस्त्रीकरण (2) उपनिवेशवाद उन्मूलन (3) विकास (4) शान्ति की कूटनीति

राजीव गांधी की विदेश नीति की नवीन दिशाएं मुख्यतः (4डी) के समन्वित कार्यक्रम पर आधारित थी। उनकी विदेश नीति में आदर्शवाद और यथार्थवाद का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। राजीव गांधी की नीति में टकराव स्थिति को टालने का यत्न करना एवं उनकी नीतियों में स्पष्टवादिता का पुट दिखाई पड़ता था।

भारतीय विदेश नीति : पी0वी0 नरसिंह राव युग

यह वह समय था जब अन्तर्राष्ट्रीय धरातल में एक बड़ी उथल–पुथल चल रही थी। जैसे शीत युद्ध का अन्त, सोवियत संघ का विघटन, संयुक्त राज्य अमेरिका का विश्व राजनीति में विजित होना। वहीं गुटनिरपेक्षता नेतृत्वविहीन सा प्रतीत होने लगा वही भारत आर्थिक संकट से गुजर रहा था। इस स्थिति में राव द्वारा अपने शासनकाल में विश्व सम्प्रदाय के बदलते परिदृश्य के साथ अपना तालमेल ढालने का प्रयास प्रारम्भ किया। जिसके तहत् भारतीय विदेश नीति गुटनिरपेक्षता से इतर आर्थिक पक्ष जिसे उदारीकरण, निजीकरण, भूमण्डलीकरण से जाना जाता है इस पथ का समर्थन किया। इस नीति का पुरोधा तात्कालीन वित्तमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह को माना जाता है क्योंकि इसी नीति से देश आर्थिक मंदी से उभर पाया।

भारतीय विदेश नीतिः इन्द्र कुमार गुजराल (21 अप्रैल 1997 से 18 मार्च 1998 तक)

देश के 12 वें प्रधानमंत्री के रूप में इन्द्रकुमार गुजराल इस पद पर आसीन हुए। विदेश नीति के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने अपना नया एवं ताजा दृष्टिकोण दिया जिसे हम 'गुजराल डॉक्ट्राइन' (गुजराल सिद्धान्त) कहा जाता है। यह सिद्धान्त कहता है यदि पड़ोसी राष्ट्र सीमा पर किसी प्रकार का अतिक्रमण करते हैं तो उसका प्रत्युत्तर उस किये गये अतिक्रमण से दुगना अतिक्रमण कर लिया जाये। इस नीति ने भारत की दक्षिण एशिया में एक महाशक्ति के रूप में प्रतिबिम्बित हुई। गुजराल द्वारा जिस प्रकार पं0 बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु को अपने भरोसे में लेकर गंगा नदी के सदुपयोग के संबंध में बांग्लादेश की शेख हसीना से बातचीत शुरू कर दी। वहीं श्रीलंका से सम्बन्धों में सुधार के लिए चंद्रिका कुमार तुंगे से भी वार्ता की ये सम्बन्ध राजीव गांधी की हत्या के बाद दोनों देशों के रिश्तों में कड़वाहट आ गई थी। वहीं पाकिस्तान के सम्बन्ध में गुजराल द्वारा पाक के नवाज शरीफ के साथ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मुद्दों पर वार्ता शुरू कर दी गई थी। भारत के चीन के साथ सम्बन्धों में एक नया मोड़ देखने को मिला दोनों राष्ट्रों द्वारा 1996 में एक समझौते पर हस्ताक्षर करके इस सुधारात्मक सम्बन्धों को आगे बढ़ाने का प्रयास करा।

गुजराल शासन काल में अपनी दोहरी सम्भावनाओं का द्वार खोल दिया जब उनकी बैठक अमेरिकी राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन के साथ हुई तो पहला उनके द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया कि उनके द्वारा (CTBT) पे हस्ताक्षर करने का कारण क्या था वहीं दूसरा उनके द्वारा अमेरिका के समक्ष संभावनाओं के द्वार खोल दिये गये। इस कूटनीति ने भारतीय विदेश नीति की दशा और दिशा तय कर दी।

भारतीय विदेश नीति

अटल बिहारी वाजपेयी कालांश 19 मार्च 1998 से मई 2004– श्री अटल बिहारी वाजपेयी 19 मार्च 1998 को प्रधानमंत्री के भाजपा गठबन्धन की सरकार के रूप में नेतृत्व में आये। वाजपेयी सरकार के समय कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाए घटी जो उनके कार्यकाल में सफल विदेश नीति संचालन के रूप में प्रसिद्धि प्रदान करती है। वाजपेयी सरकार के तत्वाधान के अन्तर्गत जब पोखरण.प्प (ऑपरेशन शक्ति -I-V) परीक्षण सम्पन्न हुआ उस समय सरकार के समक्ष अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में कई चुनौतिया उभरकर सामने

आई जिनमें पड़ोसी राष्ट्रों का शंका की दृष्टि से देखना एवं अमेरिका द्वारा आर्थिक–प्रतिबंध लगाना एवं अन्य राष्ट्रों द्वारा भी इसे शंका की दृष्टि देखा गया जबकि वाजपेई द्वारा इस परीक्षण के सम्बन्ध में सभी को आश्वस्त भी किया गया था। इस बड़े घेराव के बाद भी वाजपेई जी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर सम्बन्धों के सुधार का प्रयत्न निरन्तर रहा। जिस प्रकार दिल्ली और लाहौर तक की बस सेवा वही आगरा शिखर वार्ता आयोजित हुई जिसका कोई परिणाम न निकला इसके अलावा वाजपेई जी ने अन्य देशों के साथ सम्बन्ध सुधार के कदम उठाये।
वे देश अमेरिका, रूस, पाकिस्तान और ऐशियन देशों के साथ यूरोपियन देशों नेपाल और ईरान से संबंध सुधारने के लिए व्यापक कदम उठाये। वाजपेई एवं क्लिंटन द्वारा 21 मार्च सन् 2000 को व्यापक द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर हुए। वही 9/11 की अमेरिका में हुई घटना के बाद अमेरिका भारत के साथ आतंकवाद के विषय में सहमत हुए। जब पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा कश्मीर विधानसभा और भारतीय संसद पर हमला कर दिया था उस समय इन सभी का सही जवाब भारत ने 'ऑपरेशन पराक्रम' के माध्यम से दिया। इस प्रकार कहा जा सकता है वाजपेई सरकार द्वारा एक सफल विदेश नीति का संचालन किया गया।

भारतीय विदेश नीति : डॉ0 मनमोहन सिंह कालरा (22 मई 2004 से 26 मई 2014)

14 वीं लोकसभा चुनावों के बाद मई 2004 में संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन ;न्च्ए।द्ध की मिली जुली सरकार का गठन किया गया डॉ0 मनमोहन सिंह द्वारा कांग्रेस के अन्तर्गत इसका नेतृत्व किया गया। यह सरकार 61 सदस्यीय वामपन्थी दलों के बाहरी समर्थन पर टिकी रही। 15 वी लोकसभा चुनाव में यह गठबन्धन पुनः सत्तारूढ़ हुआ। इस गठबन्धन में कांग्रेस की स्थिति मजबूत होने के कारण नीति निर्णय में कांग्रेस की अहम भूमिका देखने का मिलती हैं। डॉ0 मनमोहन सिंह के कार्यकाल में विदेश नीति की बात की जाय तो भारत–पाक सम्बन्ध काफी सौहार्दपूर्ण देखे गये। 24 सितम्बर, सन् 2004 संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा के दौरान इसका प्रारम्भ देखा गया जब पाक राष्ट्रपति मुशर्रफ और भारतीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह की मुलाकात हुई। दोनों राष्ट्राध्यक्षों के मध्य कई विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। कश्मीर में शांतिपूर्ण स्थिति बनाये रखने, सियाचिन ग्लेशियर की तरफ जाने वाले बुल्लसेतु एवं उग्रवाद के अंत, तुलबुल परियोजना, श्रीनगर से मुजफ्फराबाद जाने वाली बस सेवा आदि चर्चा में शामिल किए गए। इसके पश्चात भी सम्बन्धों में अनबन खत्म नहीं हुई। जब वर्ष 2005 में दिल्ली सन् 2006 में वाराणसी और मुंबई में बम विस्फोट किए गए।
वही भारत–चीन सम्बन्धों की बात की जाय तो उनमें भी मधुरता देखने को मिली दोनों देशों द्वारा आतंकवाद समेत आर्थिक एवं व्यापारिक मसले, आर्थिक–व्यापारिक संबंधों में सुधार, रक्षा–सहयोग सीमा–विवाद और नाथुला मार्ग को खोलने संबंधी कई मुद्दों पर गहनता से विचार किया गया।
भारत एवं रूस संबंधों में प्रगाढ़ता देखने को मिली। वहीं भारत के एशियन राष्ट्रों के साथ संबंधों की बात करी जाय तो ये भी मित्रतापूर्ण देखने को मिले। संक्षिप्त रूप में डॉ0 मनमोहन सिंह के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति के प्रमुख सीमा चिन्ह हैं – भारत की पड़ोस नीति की घोषणा, भारत–आसियान तथा भारत–यूरोपीय संघों में उभरते घनिष्ठ सम्बन्ध, चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ और पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ की भारत यात्राए, सुरक्षा परिषद् की स्थाई सदस्यता के लिए सक्रिय प्रयास, अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन हासिल करना आदि।

भारतीय विदेश नीति एवं मोदी शासनकाल

वर्ष 2014 में राजग सरकार के आगमन के बाद जिस प्रकार स्पष्ट हो गया था कि यह सरकार अपनी विदेश नीति का मुख्य बिन्दु पहले पड़ोस की नीति से स्पष्ट करती है इसी विचार को स्पष्ट करते हुए 23 जुलाई 2014 को संसद में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने सरकार की विदेश नीति के मुख्य बिन्दु को रखा ''भारत एक शांतिपूर्ण और समृद्ध दुनिया का निर्माण करने के लिए अपनी अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए एक भूमिका निभाते हुए अपने पड़ोस पर विशेष ध्यान देगा जो पश्चिम एशिया से पूर्व एशिया तक फैला है।'' (वर्ल्ड फोकस, फरवरी 2015 पृष्ठ संख्या)
जिस प्रकार छक्।ण् सरकार द्वारा अपने प्रथम पाँच वर्षो में जो विदेश नीति में परिवर्तन एवं भारत का स्थान विश्व मानचित्र में अपनी एक अलग भूमिका का परिचय दिया गया विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं,
मोदी ने पहले कार्यकाल की शुरूआत के बाद अपने वरिष्ठ राजनयिकों से कहा था कि वे ''भारत को दुनिया की बड़ी ताकत बनाने में योगदान दें, देश को बैलेंसिंग पावर की भूमिका तक सीमित न रखा जाए''
वर्ष 2015 में तत्कालीन विदेश सचिव (एस0 जयशंकर ने इंटरनेशनल इंस्टीटयूट फॉर स्ट्रेजिक स्टडीज में भारत, अमेरिका और चीन पर फुलर्टन लेक्चर दिया था, उन्होंने इसमें कहा था कि आज का भारत दुनिया की बड़ी ताकत बनना चाहता है न कि बैलेंसिंग पावर'' (6 Aug 2019 HARSH V. PANT) www.ORFonline.org

मोदी सिद्धांत नाम से परिचित मोदी सरकार की विदेश नीति 26 मई 2014 के बाद व्यवहार में आई।

मोदी सरकार की विदेश नीति का पहला स्वरूप उनके प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में सामने आया जब उनके द्वारा थिंक इंडिया, संवाद मंच नामक एक कार्यक्रम में उन्होंने कुछ मुख्य बिन्दुओं की ओर ईशारा करवाया। अपने पड़ोसी राष्ट्रों से सम्बन्ध सुधार एवं शांति स्थापना एवं विश्व के अधिकांश राष्ट्रों के साथ द्विपक्षीय व्यापार एवं राजनीतिक साझेदारी करना है।
मोदी सरकार के तत्वावधान में प्रथम कार्यकाल के दौरान वैदेशिक मामलों का कार्यभार बीजेपी वरिष्ठ नेता सुषमा स्वराज को दिया गया था देश की पहली महिला विदेश मंत्री का गौरव प्राप्त किया वर्तमान में उनके देहान्त के बाद यह कार्यभार सुबहाण्यम जयशंकर द्वारा क्रियान्वित करने के लिए जिम्मेदार है।

पड़ोस पहले की नीति

जिस प्रकार मोदी सरकार के शासन में आने से पूर्व ही यह संकेत बिंदु दे दिए थे कि उनकी नीतियों में पड़ोसी राष्ट्रों को प्रमुखता दी जाएगी इसका साक्ष्य रूप उनके शपथ ग्रहण समारोह में स्पष्ट रूप से देखने को मिला। जब राष्ट्राध्यक्ष इस समारोह में सम्मिलित हुए एवं प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष के साथ द्विपक्षीय वार्ता की गई जिसे मिनी सार्क सम्मेलन के रूप में कहा जाता है।

Act East Policy

वर्ष 1992 में नरसिम्हा सरकार के शासन काल में आर्थिक पक्ष को विशेष रूप से देखते हुए (Look East Policy) या पूर्व की ओर देखो, नीति का आहवान किया गया था वहीं वर्तमान मोदी सरकार ने इस नीति में रणनीतिक एवं सुरक्षा पक्षों को रखते हुए इसे Act East Policy के रूप में प्रतिस्थापित किया। इसमें आसियान एवं पूर्वी एशियाई के साथ संबंध सुधार प्रमुख केन्द्र बिन्दु होंगे।
वहीं समुद्री नीति एवं सुरक्षा की बात कही जाए तो भारत का सामुद्रीन क्षेत्र हिन्द महासागर को माना जाता है, जो कि वर्तमान समय में चीनी रणनीतिक उपस्थिति के कारण एक हाट स्पाट में परिवर्तित हो रहा हैं इस स्थिति में भारत चीन का मुकाबला करने के लिए अपने समुद्री पड़ोसियों के साथ आर्थिक एवं सुरक्षा सहयोग प्रस्तावों के माध्यम से पहुंचना प्रारम्भ कर दिया। चीनी नौसैनिक गतिविधि के विस्तार को देखते हुए मोदी प्रशासन द्वारा (प्रोजेक्ट मौसम) शुरू किया गया, जिसे चीनी समुद्री सिल्क रोड की प्रतिद्वंदी माना जाता है।

मोदी कार्यकाल की कुछ महत्वपूर्ण विदैशिक यात्राएँ जिसमें पड़ोसी राष्ट्रों एवं अन्य प्रमुख राष्ट्रों की यात्राएँ महत्वपूर्ण है। जिनमें अपने कार्यकाल के 100 दिनों के भीतर भूटान, नेपाल की यात्राओं के साथ–साथ आस्ट्रेलिया, चीन और अमेरिका की वैदेशिक यात्रा का वर्णन किया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी की विदेश यात्रा की बात की जाए तो उन्होंने अपनी प्रथम वैदेशिक यात्रा अपने पड़ोसी राष्ट्रों से प्रारम्भ की जिसका संकेत उनके द्वार पूर्व में ही दे दिया गया था। अपनी प्रथम यात्रा उन्होंने भूटान से प्रारम्भ की यह 70 वर्षो में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की प्रथम यात्रा थी। उसके पश्चात नेपाल एवं अन्य पड़ोसी राष्ट्रों की यात्राएँ सम्पन्न हुए।

भारत जापान संबंध

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की जापान यात्रा सफल मानी गई है। यह यात्रा केवल दो एशियाई राष्ट्रों का सहयोग मात्र नहीं है, बल्कि अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति में एशिया के महत्व में प्रकाश डाला है। दोनों राष्ट्रों के मध्य चर्चित विषय बुलेट ट्रेन, अवसंरचना, विनिर्माण, परिवहन और स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र आदि। जहां भारत को 3.5 ट्रिलियन येन (33.5 बिलियन डॉलर) जापानी निवेश प्राप्त हुआ। वहीं जापान को एक विशाल बाजार उपलब्ध हुआ। इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह कि पूर्व में बढ़ते चीनी साम्राज्यवादी फौजवादी दावों का मुकाबला करना।

भारत आस्ट्रेलिया संबंध

भारत–आस्ट्रेलिया संबंधों की बात की जाय तो ये विश्व धरातल पर अधिकांश निर्णयों पर एक जैसे विचार प्रस्तुत करते हैं। दोनों राष्ट्र एक जैसी लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं संसदीय आदर्श एवं भाषा का समर्थन करते है हालिया आस्ट्रेलिया प्रधानमंत्री टोनी एबांट की भारत यात्रा भारत–आस्ट्रेलिया पुरातन सम्बन्धों को पुनः ताजा करती है। दोनों राष्ट्रों का सहयोग दक्षिण एशिया, दक्षिण–पूर्व एशिया और हिन्द–प्रशांत क्षेत्र की शांति, समृद्धि और सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है एवं यह सहयोग पूर्व में भी उतना उपयोगी माना जा रहा है 21 वीं सदी को पूर्व की सदी कहा गया जिस प्रकार आर्थिक महत्व में जो रणनीतिक बदलाव पूर्व के पक्ष में देखे गये हैं जिसे भारत एवं आस्ट्रेलिया संयुक्त रूप से हल कर सकते हैं। प्रधानमंत्री एबॉट द्वारा स्वयं एवं मोदी को अवसंरचना के पक्षधर प्रधानमंत्री के रूप में इंगित करते हुए उन्होंने निर्माण कंपनियों, शहर और प्रणाली डिजायन, हरित प्रोद्यौगिकी और वित पोषण जैसे वहीं चीन पूर्वी एवं दक्षिणी चीन पर अपने दावे को आगे रखा है। द0 पूर्वी एशिया में क्षेत्रीय विवाद का बना हुआ है। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की हालिया यात्रा काफी सफल मानी जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्पष्ट कर दिया था कि उनका मुख्य फोकस कारोबार पे है। चीनी नेतृत्व में बदलाव के साथ ही संबंधों में भी गतिशीलता देखने को मिली दिल्ली के साथ 20 द्विपक्षीय संबंधों का रचनात्मक विकास, सांस्कृतिक संबंधों के विकास के रूप में चीनी शहरो के मॉडल सिस्टर–शहरों के विकास एवं भारतीय रेलवे के उन्नयन करने से सम्बन्धित हैं दोनों के मध्य परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर हुए जो भारत को परमाणु रिएक्टरों को बेचने चीन को सक्षम करेगा। इस प्रकार दोनों राष्ट्रों के संबंधों को नए क्षितिज की ओर ले जा रहे हैं।

भारत अमेरिका संबंध

विश्व सम्प्रदाय में दोनों ही राष्ट्र सफल लोकतंत्र के रूप में देखे जाते हैं। दोनों ही राष्ट्रों के दृष्टिकोण वैश्विक महत्व के मुद्दे पर काफी समान देखने को मिलते हैं। दोनों राष्ट्रों के मध्य करीब आना ना रूस के साथ विश्वस्त दोस्ती का मत था ना यह गुटनिरपेक्षता की भारत नीति का अंत था। यह प्रक्रिया मनमोहन सरकार द्वारा प्रारम्भ की गयी थी। ऊर्जा संकट समाप्त करने एवं व्यापार एवं वाणिज्य और दोनों के बीच आर्थिक मजबूरी के कारण अमेरिका के साथ 2008 में असैन्य परमाणु करार का समापन किया।

विविध क्षेत्रों में आस्ट्रेलिया द्वारा अपने व्यापार क्षितिज को बढ़ाते हुए भारत में दसियों अरबों निवेश का वादा किया। स्वास्थ्य, जैव –प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी निवेश की संभावना व्यक्त की। इस प्रकार आस्ट्रेलिया भारत के लिए वित्तिय शक्ति प्रदाता स्थल बन सकता है। आस्ट्रेलिया प्रधानमंत्री का इस प्रकार का विशेष रूझान भारत के विशेष हित को इंगित करता हैं, वही भारत आस्ट्रेलिया का पाँचवा निवेश बाजार होने के कारण विशेष महत्ता रखता है तो स्वाभाविक है कि आस्ट्रेलिया संबंध सुधार चाहता है।

भारत–चीन संबंध

भारत–चीन संबंध सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत रूप से करीबी राष्ट्र माने जाते थे परन्तु ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के पश्चात 1947 में भारत आजादी के बाद यह सम्बन्ध सीमा मुद्दों के आधार पर बिगड़ते गये। वहीं 1962 में चीनी आक्रमण का सामना करते हुए हार का मुँह देखना पड़ा। जहॉ पिछले चरण में भारत एवं चीन संबंध सन्देहपूर्ण था वहीं वर्तमान में दोनों राष्ट्रों द्वारा आपसी सहयोग एवं द्विपक्षीय संबंधों को अधिक मजबूत करने के लिए दोनों राष्ट्र प्रयासरत हैं। दोनों राष्ट्रों के मध्य अधिक, व्यापारिक, शैक्षणिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के साथ सीमा विवाद स्थल पर संयुक्त कार्य समूह होने के अलावा वैज्ञानिक संबंधों में विविध रहे है हालांकि यह कोई विशेष समाधान की ओर नहीं पहुँचे हैं वहीं चीन द्वारा नियमित रूप से भारत में घुसपैठ के मामले आते रहते है।

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पद सम्भालने के बाद महासभा की बैठक एवं दोनों राष्ट्रों के मध्य सम्बन्ध प्रगाढ़ करने के उद्देश्य से यात्रा की गई जिसमें बैठक में भाग लेने के साथ–साथ वह अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा से मिले जो बहुत महत्वपूर्ण मानी गई।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रधानमंत्री मोदी द्वारा विदेश नीति के आधारभूत सिद्धान्तों में पूर्ण परिवर्तन ना करते हुए परिस्थितियों एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर राष्ट्रवाद एवं उपयुक्त परिवर्तनशीलता का परिचय दिया गया जिस प्रकार हमारे पूर्व राष्ट्राध्यक्षों की विदेश नीति का प्रमुख ध्येय रहा है, पड़ोस पहले की नीति जिसका मोदी सरकार द्वारा अनुकरण किया गया वहीं राव सरकार की Look East Policy को Act East Policy में प्रतिस्थापित किया गया। जिस प्रकार योग को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व योग दिवस के रूप में घोषणा की गई। वही मोदी प्रथम शासनकाल में जापानी प्रधानमंत्री रिजों आबे की दशाश्वमेघ घाट पर उनकी उपस्थिति वही प्रधानमंत्री डेविड कैमरन के साथ ब्रिटेन में उनकी उपस्थिति ये सब एक बात को स्पष्ट करते है कि जहॉ नेहरू के लिए वैश्विक आकर्षण को प्राप्त करने का मार्ग एक नैतिक सीढ़ी थी वहीं मोदी सरकार के लिए यह धार्मिक–नैतिक और आर्थिक कूटनीति रही है।

सन्दर्भ सूची

1. वर्ल्ड फोकस भारत की विदेश नीतिः भागः1 पृष्ठ संख्या–69
2. वर्ल्ड फोकस भारत की विदेश नीतिः भागः1 पृष्ठ संख्या–31–36
3. खन्ना एन0वी0, अरोड़ा लिपाक्षी, भारत की विदेश नीति पृष्ठ संख्या–2
4. खन्ना एन0वी0, अरोड़ा लिपाक्षी, भारत की विदेश नीति पृष्ठ संख्या–21
5. वर्ल्ड फोकस, फरवरी 2015 पृष्ठ संख्या–169

6- Pant V. HRSH) www. ORF Online Org- 6 Aug 2019

7. दीक्षित एन0जे0 भारतीय विदेश नीति